हिंदी के अप्रतिम कवि व गीतकारः आनंद बख्शी

शोधार्थी
अशोक कुमार प्रमाणिक
हिन्दी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

सारांश:- आनंद बख्शी हिंदी सिनेमा संसार के इतिहास में एक सुप्रसिद्ध और विलक्षण प्रतिभा के गीतकार हैं। जिन्होंने अपनी कलम से आठ मिनट में गीत लिखकर संगीतकार को थमा देने का कीर्तिमान हासिल है। आनंद बख्शी ऐसे गीतकारों में से एक है जिनका स्थान फ़िल्मी गीतकारों की श्रेणी में शीर्ष पर है। फ़िल्म इतिहास में जिनके नाम छः सौ से अधिक फिल्मों में चार हजार से भी अधिक गीत लिखने का समीर अनजान के बाद दूसरे स्थान पर है जबकि समीर अनजान इनके ही शिष्य रहे हैं। उनके लिखे गीत उस ज़माने से लेकर इस ज़माने तक बड़े ही चाव से सुने और गुनगुनाए जाते हैं। उनके पास मजाक, संगीत औए दर्शन की गहरी समझ थी। उनके गीतों की पहचान उनके सरल शब्दों का प्रयोग, प्रचलित भाषा शैली, भावनात्मकता गहराई और विषयों की विविधता है। चाहे वह प्रेम का गीत हो, चाहे मस्ती का, बंजारे भूमि का हो, शहर का हो, चाहे बस्ती का, भक्ति का भजन हो, चाहे मातृभूमि का, सामाजिक संदेश का हो, चाहे जीवन दर्शन का आनंद बख्शी ने हर शैली में अपनी लेखनी का सफल प्रयोग किया है। इनके गीतों में जो भावनात्मक गहराई है, वही गहराई उनकी कविताओं में भी है। उन्होंने अपनी प्रतिभा का परिचय सबसे पहले कवि के रूप में दिया है, बाद में उनकी गीतकार प्रतिभा ने सबके हृदय पर गहरी छाप छोड़ी। सर्वप्रथम अपने मन की पीड़ाओं को अपनी कविताओं में अकेलापन, आर्थिक स्थिति, मातृभूमि की याद आदि को व्यक्त किया। इन विषयों से सम्बंधित संदेशों को श्रोताओं के हृदय की अतल गहराई तक पहुँचाना, उनकी कविता से परिचय कराना, उनको कवि रूप में स्थान दिलाना तथा उनको हिन्दी साहित्य में प्रतिष्ठित करना है। उनकी कविता उस समय की परिस्थिति के अनुकूल होती थी। उनके वास्तविक जीवन की घटनाओं को कविता में उकेरकर जीवन जीने का आधार बनाया। उन्होंने कम ही कविता लिखी लेकिन उन कविताओं में प्रेरणा, यादें, मातृभूमि प्रेम आदि की गहराई है।

बीज शब्द- गीतकार, संगीतकार, फिल्म, इतिहास, दर्शन, भावनात्मक, साहित्य, गीत, कविता।

आनंद बख्शी का जन्म 21 जुलाई 1924 को रावलपिंडी (वर्तमान पाकिस्तान) में हुआ था। पंजाब के इस गाँव में जन्म हुए बच्चे का नाम रखा गया -आनंद प्रकाश। आनंद यानी ख़ुशी और प्रकाश यानी रौशन, अर्थात् माता-पिता के लिए उस समय उसके चेहरे पर ख़ुशी और जीवन में ज्योत बन कर आया। बाद में यही नाम आगे चलकर आनंद बख्शी के नाम से प्रसिद्ध हुआ जिसका मतलब है- "आनंद यानी ख़ुशी और बख्शी यानी तोहफ़ा। वो अपने माँ-बाप के लिए एक तोहफ़ा थे। अपनी पूरी जिंदगी ये कवि-गीतकार अपने लाखों-करोड़ों सुनने वालों को खुशियों का तोहफ़ा ही बाँटता रहा।"[1] इस तरह उसके नाम के साथ ही उसका और उसके परिवार की ख़ुशी और प्रकाशमय जीवन की आशा जुड़ी हुई थी। इस खुशनुमा परिवार के ज्योतिर्मय जीवन में एक बदलाव आता है, जब 2 अक्टूबर 1947 को अपनी पुश्तैनी जमीन जायदाद छोड़कर भारत जाना पड़ा। 2 अक्टूबर के कुछ हफ़्ते पहले ही भारतीय उपमहाद्वीप का बँटवारा हो गया था और उनके बीच तलाकशुदा 'रैडक्लिफ लाइन' खींच दी गयी और इस हादसे के बाद लाखों लोगों को बेघर होना पड़ा और रातोंरात भारत आना पड़ा। देवमणि पाण्डेय लिखते हैं- "विभाजन के बाद एक घर की तलाश में उनके परिवार को काफ़ी भटकना पड़ा।"[2] इस विभाजन ने आनंद के जीवन की दिशा ही बदल दी। यह एक प्रकार का हादसा था जिसके शिकार आनंद का पूरा परिवार था। विभाजन के बाद उनका परिवार अपनी मातृभूमि रावलपिंडी को छोड़कर भारत आ गया था। आनंद बख्शी के जीवन की यह दूसरी घटना थी जिसमें काफ़ी तकलीफों का सामना करना पड़ा था परन्तु उनके जीवन की पहली घटना जब उनकी माँ उन्हें छोड़कर चल बसी। आनंद की सबसे बड़ी तकलीफ ये ही थी "अपनी माँ 'मित्रा' को खो देने की तकलीफ, जिन्हें वो 'माँजी' कहकर पुकारते थे। उस वक्त नन्द छह बरस के थे जब पेट में एक और बच्चा था, सेहत बिगड़ी और उनकी माँ चल बसी।"[3] विभाजन के पश्चात् जब दिल्ली पहुँचे, फिर पुणे चले गए ताकी शरणार्थी- पंजीकरण करा सके। इसके बाद जब सुकून मिला, सोंचने का वक्त मिला और हालात समझ में आने लगी तो सबके मन में एक ही प्रश्न था-"आप लोग घर से क्या-क्या लेकर आए हैं?"[4] सभी अपनी कीमती वस्तुओं

को लेकर आए थे पर जब आनंद की बारी आई तो उन्होंने अपने साथ अपनी माँ की एक पुरानी तस्वीर उठा लाए थे। जब उन्होंने बताया कि अपनी माँ की पुरानी तस्वीर उठा लाया है तो सभी ने उन पर चिल्लाए –

"क्या बेकार की चीजें तुम लेकर आए हो! हम बिना कीमती चीजों के यहाँ कैसे परिवार चलाएँगे?

नन्द ने जवाब दिया-"पैसे तो हम नौकरी करके कमा सकते हैं, मगर माँ की तस्वीर अगर पीछे रह जाती तो मैं कहाँ से लाता? मुझे तो माँ का चेहरा भी याद नहीं। इन तस्वीरों के सहारे ही मैं आज तक जीता आया हूँ।"[5]

आनंद की इस तरह की बातें सुन सबकी आँखे गीली हो गई और सब उनके इस भावनात्मक कथन से प्रभावित हुए। उनके पिता उन्हें गले से लगा लेते हैं। माँ के प्रति स्नेह देख उनके पिता का हृदय भी व्याकुल हो उठा। उस समय पिता ने आशीर्वाद दिया कि 'तुम बहुत आगे तक जाओगे।' सच में ऐसा हुआ। बचपन से ही उन्हें गीत गाना और अपनी कविताओं पर धुन बनाने में बहुत आनंद आता था। वे 1947 में जब फ़ौज में गए उस समय से ही कविताएँ लिखनी शुरू कर दी थी। बचपन में उन्होंने जो कुछ देखा, समझा और झेला, वो सभी यादें उनके साथ जुड़ी रही। इसका प्रभाव उनके गीतों में दिखाई पड़ता है। स्थान परिवर्तन होने से परिवार आर्थिक स्थिति के दौर से गुजरने लगा। इस तरह परिवार को आर्थिक दौर से गुजरते देख आनंद प्रकाश परिवार की मदद करने के लिए उन्होंने सेना में शामिल होने का फैसला किया। आनंद बख्शी ने भारतीय नौसेना (नेवी) में 1947 में भर्ती ली, जब उनकी आयु मात्र सत्रह साल की थी हालाँकि, उनका मन हमेशा गीत-संगीत और फिल्मों की ओर खींचा रहता था। फौज में रहने के बावजूद भी आनंद प्रकाश अपना सपना नहीं भूले बल्कि उसे और अधिक पुख्ता बनाते चले गए। फौज की कार्यवाही के बाद जब भी समय मिलता वे अपना समय कविता और गीत लिखने में व्यतीत करते। "आनंद बख्शी के शब्दों में – ब्रेक के दौरान मैं अपनी नज्में लिखता था, सन् 1949 में राज कपूर और नरगिस के अभिनयवाली फ़िल्म 'बरसात' रिलीज हुई और मैंने ये फ़िल्म बीस बार देखी थी ....कुछ ही महीनों में मैंने 'बरसात' के गाने अपनी तरह से लिख लिए थे मानो मैं ही उस फ़िल्म का गीतकार हूँ। मैं ऐसा उन्हीं फिल्मों के लिए करता था जो मुझे पसंद थी। इसके बाद मैं अपने लिखे इन गानों को अपने साथियों के लिए गाता था।"[6] इस तरह आनंद प्रकाश की नौकरी के साथ-साथ उनकी लेखनी भी जारी रही। उनको जब भी समय मिलता अपने फौजी भाइयों को उनकी लिखी शायरी और कविता सुनाकर मनोरंजन कराते, सभी उनके इस व्यवहार से बहुत खुश थे और उनकी कविताओं पर दाद भी देते। आनंद बख्शी अपने मित्रों को अपनी कविता सुनाते और कविता सुनकर उनके मित्र खूब तालियाँ और सीटी बजाते। उनके सभी मित्र उनकी प्रखर प्रतिभा से काफी प्रसन्न थे। उनके मित्रों को कवायद की थकान दूर करने का सबसे अच्छा उपाय आनंद बख्शी के रूप में मिल चुका था। उनका सपना हमेशा उनके साथ था – मुंबई जाना और फिल्मों में गाना लेकिन उनकी प्रखर लेखनी ने एक गीतकार को जन्म दिया जब उनके लिखे गीत फ़ौज में उनके सीनियर सुनते और कहते की 'तुम मुंबई चले जाओ और अपनी किस्मत आजमाओं।' जब अपने सीनियर से इस तरह की बाते सुनते तो मुंबई जाने और फिल्मों में गीत लिखने का सपना और अधिक व्याकुल कर देता परन्तु एक समस्या यह थी कि उस अनजान शहर में रहने-खाने की व्यवस्था कैसे हो? इस प्रश्न ने उन्हें इस तरह बांध देता कि चाहते हुए भी हिम्मत नहीं होती की फ़ौज की नौकरी छोड़ एक अनजान शहर में भटकने के लिए चला जाए। ऐसी गम्भीर स्थिति से निकलने के लिए कविता लिखते और मन में एक जुनून उत्पन्न करते। ऐसे समय में उनका एकमात्र सहारा उनकी कविता थी। उनकी कविता ही इस सपने को अपने हृदय में जीवित रखने के लिए प्रेरित करती रहती।

आनंद बख्शी न केवल गीतकार थे बल्कि एक अच्छे कवि भी थे। उनके गीतों में जितनी गहराई है उससे कहीं अधिक गहराई उनकी कविताओं में भी दिखाई पड़ती है। आनंद बख्शी के हृदय में एक कवि का जन्म तब हुआ जब उन्होंने होश भी न संभाला तब अपनी आँखों के सामने माँ को खोया, जब थोड़ी समझ आई तो अपनी पुश्तैनी जमीन छोड़कर एक नए शहर में आना पड़ा। उस शहर में उन्होंने गरीबी देखी, परिवार को आर्थिक स्थिति के दौर से गुजरते देखा, माँ की कमी महशूस होने लगी, नौकरी की आवश्यकता महशूस होने लगी, रहने के लिए छत की कमी महसूस हुई। जब अपने को अकेला महशूस करने लगा तब उनके हृदय की संवेदना जागी और एक कवि कलाकार के रूप अपनी संवेदना को मूर्त रूप देने के लिए शब्दों में पिरोकर कविता का रूप दिया। उस समय से ही वे कविता लिखने लगे थे। ये गीतकार तो बाद में बने, पहले ये कवि रूप में आए। उस समय भले ही उनकी पहचान कवि रूप में न बनी हो और न ही कोइ कविता प्रकाशित हुई हो। लेकिन उनकी पहली कविता तब छपी जब आनंद बख्शी किशोर अवस्था में थे। जब यह कविता छपी उस समय आनंद बख्शी रावलपिंडी में थे। उस समय पिंडी में 'कौमी' नाम से एक समाचार पत्र निकलता था। उसी पत्र में उनकी पहली कविता छपी। उस समय उनकी प्रतिभा एक कवि के रूप पहचान में आई। अपनी पहली प्रकाशित कविता के

संबंध में आनंद बख्शी बहुत प्रसन्न थे। इस प्रसन्नता को वे इस रूप में बयाँ करते हैं- "मेरी पहली कविता तब छपी जब मैं किशोर था, पिंडी में एक अख़बार छपता था जिसका नाम था 'कौमी'। हालाँकि मुझे नहीं पता था कि इस तरह छपने के क्या मायने हैं पर मुझे खुशी हुई और मैंने अपने कुछ दोस्तों को वो अखबार दिखाया। मन में ख्याल आया, अगर आज माँ जिंदा होती तो मैं उन्हें भी दिखाता और वो कितनी खुश होतीं.....।

ऐ खुदा, गम तेरी दुनिया के, मैं पी सकता नहीं
माँगता हूँ आज कुछ, अब होंठ-सी सकता नहीं।
जिंदगी इस वास्ते जीने को जी करता है दिल
और मौत इस खातिर, कि मैं और जी सकता नहीं।।
हाँ, इसी गुलशन पे आई है बहारें लाख बार,
हाँ, इसी वादी पर बरसी हैं घटाएँ बार-बार,
आज जो बस्ती तुझे दिखती है रेगिस्तान-सी,
हमनशी एक दिन यहीं पे फूटे थे आबशार ।"[7]

इस कविता में जीवन की गहरी संवेदना और पीड़ा दिखाई पड़ती है। प्रथम कविता में ही जीवन की वास्तविकता को समेट लिया है। ये उनकी पहली कविता है जिसमें अपने आराध्य से दुनिया के दुःख-दर्द और अवसाद को नहीं झेल पाने तथा इन सब से छुटकारा पाने के लिए निवेदन कर रहा है। फिर आपाधापी जीवन और हताश हृदय में नव चेतना भरने की प्रार्थना कर रहा है परन्तु परेशान जीवन और निराश हृदय के चारों ओर मृत्यु दिखाई दे रही है। इस जीवन में कभी ख़ुशी तो कभी आँसू की झरना फूटी है। जहाँ आज रेगिस्तान दिख रही है वहाँ कभी जलधारा भी बही थी।

इनकी दूसरी कविता तब छपी जब वे फ़ौज में थे। फ़ौज में रहकर कवायद के बाद जब भी समय मिलता, वो समय उनके लिए कविता लिखने का होता। जब कविता पूरी हो जाती तो अपने मित्रों को सुनाते। इस तरह अपने और अपने मित्रों का दिल बहलाया करते। उनकी दूसरी कविता 25 मार्च 1950 को उस ज़माने की प्रसिद्ध पत्रिका 'सैनिक समाचार' में छपी थी। इस पत्रिका के संपादक से उन्होंने निवेदन किया था कि उनके नाम से पहले उसके रैंक को लिखा जाए जिससे कि वो अपने मित्रों और सीनियर के सामने शान बघार सकें। सिर्फ आनंद प्रकाश बख्शी न लिखकर 'फ़ौजी आनंद प्रकाश बख्शी' लिखा जाए। उनकी दूसरी कविता में उस व्यक्ति का पछतावा और कष्ट को दिखाया गया है जो अपने दुर्भाग्य से पूरी तरह परेशान है। अपने जीवन के संघर्षमय क्षण बार-बार उन्हें ठोकरें देता जा रहा है और वे उन सारी परेशानियों को झेलता जा रहा है। यहाँ पर उस व्यक्ति की गंभीरता को देखते हुए कवि ईश्वर, कुदरत और हालात तीनों को चुनौती देता है। कवि लिखता है-

गिरेंगी बिजलियाँ कब तक, जलेंगे आशियाने कब तक,
ख़िलाफ़ अहल-ए-चमन के तू रहेगा आसमान कब तक?
सताएगा, रुलाएगा, जलाएगा जहाँ कब तक,
ज़मीर ज़हनों-जिस्म, जाँ से, निकलेगा धुआँ कब तक?
निज़ाम-ए-गुलिस्ताँ, अहल-ए-गुलिस्ताँ ही सँभालेंगे
तेरी मनमानियाँ, तेरी हुकूमत बाग़बाँ कब तक?
हमारी बदनसीबी की आखिर कोई हद होगी,
रहोगे हम पर तुम ना-मेहरबाँ, ऐ मेहरबाँ कब तक?
मेरी आँखें बरसती हैं, मुसलसल हिज्र में बक्शी
मुक़ाबिल इनके बरसेंगी भला ये बदलियाँ कब तक?"[8]

आनंद बख्शी दादर स्टेशन पर उतरे तो लोगों की भीड़ देखकर आश्चर्यचकित रह गए। ऐसी भीड़ उन्होंने कभी नहीं देखी थी- न पिंडी में, न ही दिल्ली में और न ही फ़ौज में। उस समय जो अकेलेपन का एहसास हुआ उसे वही व्यक्ति भलीभांति महशूस कर सकता है जो अपने घर और गाँव से अचानक शहर आया हो या चारदीवारी में बंद होने के बाद अचानक उसे लोगों के बीच आना पड़ा हो। आनंद बख्शी अपने शब्दों में बयाँ करते हुए कहते हैं- "मुझे अकेलेपन का एहसास हुआ लगा कि इस शहर में मैं कैसे रहूँगा इसीलिए मैंने अपने बंसीवाले से मदद माँगी। स्टेशन से बाहर निकलने से पहले मैंने एक प्रार्थना लिखी ताकि मुझे वो हौसला और हिम्मत दें-

मेरे भगवान, बंसीवाले
तूने मुझे जज्बात दिए,
संगीत का प्रेम मेरे जिस्म के कोने-कोने में भर दिया,
मैं तेरा अहसानमंद हूँ।
और अब मैं तेरे सामने झुककर,
अपने उन हसीन ख्वाबों की ताबीर माँगता हूँ
जो तूने मेरी मासूम आँखों में बसाए
-तेरा नंद।"[9]

अपने जन्म स्थान रावलपिंडी को याद करते हुए उन्होंने 'रावलपिंडी' शीर्षक से एक कविता लिखी जिसमें अपनी मातृभूमि और अपनी पिंडी की जुदाई का मार्मिक वर्णन किया है। इस कविता में न केवल उस समय की स्थिति को दर्शाता है बल्कि वर्तमान समय में भी इसकी प्रासंगिकता है। यह कविता हर व्यक्ति की पीड़ा को कहती है जो अपने प्रिय वस्तु खो चुके हैं या मजबूरन उन्हें छोड़ना पड़ा हो। अपनी प्यारी पिंडी को याद करते हुए आनंद बख्शी इस कविता में पिंडी के प्रति जो प्रेम और सहानुभूति दिखाई है इसमें पूर्णतः फलीभूत हुआ है। उसे इस रूप में व्यक्त करते हैं-

सानेहा ये मेरी जिंदगी सह गई
मैं यहाँ आ गया वो वहाँ रह गई।
कुछ ना मैं कर सका, देखता रह गया
कुछ ना वो कर सकी देखती रह गई।
लोग कहते हैं तकसीम सब हो गया
जो नहीं बँट सकी चीज वो रह गई।
इन जमीनों ने कितना लहू पी लिया
ये खबर आसमानों तलक है गई।
रास्ते पे खड़ी हो गई सरहदें
सरहदों पर खड़ी बेबसी रह गई।
याद पिंडी की आती है अब किसलिए?
मेरी मिट्टी थी, झेलम में वह बह गई।
दे गई घर, गली, शहर मेरा किसे
क्या पता किससे बक्शी वो क्या कह गई।"[10]

इस तरह से कविता लिखने की प्रक्रिया जारी रही। गीत लिखने के साथ-साथ उनकी कविता के प्रति रुझान बनी रही। जब भी मौका मिलता कविता लिख लेते भले ही उनकी कविता प्रकाशित न हो सकी परन्तु लेखनी जारी रही। गीतकार के रूप में प्रसिद्धि मिलने के बाद भी कविता उनके हृदय के आस-पास रही और अपने फ़ौज के दिनों को याद करते हुए भारतीय फ़ौज के लिए तीन कविताएँ लिखी-

सिग्नल कोर गीत

पूरब-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण, गूंज है चारों ओर।
देश की सेवक, देश की रक्षक मेरी सिग्नल कोर.......

कोर गीत (2001)

मैं इक हिन्दुस्तानी बस, यह है मेरी पहचान।
जान है सबसे प्यारी, जान से प्यारी हिंदुस्तान.........

अस्सी दशक के गीत

हम पुराने फौजियों को आपने
याद रखा, प्यार का तोहफा दिया।
सरहदों पर फिर खड़े हो जाएँगे
वक्त ने अगर हमको मौका दिया........"[11]

आनंद बख्शी ने इस तरह की कई कविताएँ लिखी है। उन्होंने 21 जून, 1966 को पहली बार ऊँचे दामों में एक कार खरीदी थी। उनकी वो फ़ियेट कार उनके लिए लकी साबित हुई थी। जो भी कलाकार होते हैं वे

अपनी पसंदीदा वस्तु, व्यक्ति या भावनात्मक प्रतिभा के प्रति अपनी आस्था से कलाकारी करते हैं। जिस प्रकार कोई मूर्तिकार अपने इष्ट की मूर्ति बनाकर अपनी आस्था प्रकट करता है, उसी प्रकार गीतकार आनंद बख्शी अपने प्रिय कार के प्रति कविता लिखकर अपनी भावना व्यक्त करते हैं। उन्होंने अपनी ये प्रिय फ़ियेट कार पर एक कविता लिखी। वो कार उनकी पसंद की थी, उस कार पर उनकी जान बसती थी। उस कविता में आनंद बख्शी कहते हैं-

बख्शी हम यारों के यार, अपनी यार ये फ़ियेट कार,
बाकी सब कारें बेकार।
थी मेरी पहली चितचोर, मॉडल 1964
अब तक उससे मेरा प्यार।।
फ़ियेट मेरा लेटेस्ट रोमांस, सड़कों पर ये करती डांस
तेज हवा जैसी रफ़्तार।"[12]

जब कोई व्यक्ति अपनी जिंदगी में संघर्ष करता है तो उस संघर्ष के दिनों में कई प्रकार के उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ता है। उस उतार-चढ़ाव में या तो वह व्यक्ति अपनी जिंदगी से हार मान लेता है या अपनी जिंदगी से संघर्ष करके अपनी जिंदगी ही बदल देता है और आने वाले लोगों के लिए वो प्रेरणा बन जाता है। आनंद बख्शी अपने जीवन में जो संघर्ष किया, वो संघर्ष वर्तमान समय में एक उदाहरण बनकर रह गया है। उस समय के संघर्ष को कविता का रूप देकर बीते दिनों की यादों को समेट लिया है। अपने संघर्ष के दिनों को याद करते हुए आनंद बख्शी अपने बहत्तरवें जन्मदिवस के अवसर पर वो कविता लिखी थी। उन्होंने 21 जुलाई 2001 को वो कविता सबको सुनाई थी। उस कविता का शीर्षक था-'इकहत्तर साल गुजरे। ये उनके जीवन की अंतिम कविता थी। इस कविता में आनंद बख्शी के जीवन का अभाव, भाव और स्वभाव ये तीनों ही द्रष्टव्य है। कभी अभाव तो कभी व्यस्तता तो कभी चाहत तो कभी हिम्मत आदि को दर्शाती है। आर्थिक तंगी व्यक्ति को खुला जीवन जीने के लिए वंचित करती है। उसे अपनी जंजीर में बाँधकर जकड़े रखती है ताकि उसकी जीवन शैली संतुलित बनी रहे। इस कविता में आर्थिक स्थिति का मार्मिक वर्णन किया है। कविता है-

बड़े बेहाल गुजरे
सुने कोठे पे मुजरे
लिखे गीतों के मुखड़े
हुए इस दिल के टुकड़े
सुनो बक्शी के दुःखड़े
कहीं लाखों में एक हूँ
मैं बस एक नागरिक हूँ
X x x x x x x x x x x X
तबीयत के मुताबिक
कभी मौसम नहीं था
कभी बोतल नहीं थी
कभी ये गम नहीं था
मुझे आज कुछ ना कहना
मेरा दिल ठिकाने है ना ।"[13]

अपनी किस्मत आजमाने के लिए आनंद बख्शी जब दूसरी बार सन् 1956 में गीतकार का सपना लिए बंबई आए थे तब उस भीड़ भरी दुनिया में अकेलापन दूर करने तथा खुद को प्रेरित करने के लिए एक कविता लिखी थी। जिस कविता का शीर्षक था- 'नदी की शुरुआत हमेशा कहीं से तो होती है'। यह गज़ल की तर्ज पर है, इसमें भले ही मासूक-मासूका की बातचीत नहीं है परन्तु प्रेरित करने की अद्भुत क्षमता है। इस कविता के संबंध में आनंद बख्शी स्वयं कहते हैं –"जब मैं फ़िल्मों में आया,तो मैंने खुद को प्रेरित करने के लिए ये कविता लिखी थी, इसने मुझे अपनी जद्दोजेहद, काम और निजी ज़िंदगी में हमेशा प्रेरित किया।"[14] दिल्ली से प्रकाशित होने वाली 'रूबी' पत्रिका में सन् 1980 को यह कविता छपी थी, जो बेहद असरदार कविता है। आज के समय में भी इसकी प्रासंगिकता है। अगर आपकी तदबीरें यानी कोशिशों से तक़दीर बदलती है तो वह तक़दीर नहीं होती है यानी आपका भाग्य नहीं होता। और अगर आपकी तक़दीरों को तदबीर नहीं बदलती तो वह तदबीर यानी कोशिश नहीं होती। कविता की पंक्तियाँ हैं-

जो तदबीरों से फिर जाएँ वो तकदीरें नहीं होती।
बदल दें जो ना तकदीरें वो तदबीरें नहीं होती।।
मुहब्बत के महल का तो तसव्वुर भी नहीं आसान,
वफ़ा के ताज की आसान तामीरें नहीं होती।
रिहाई का मुसम्म अहद कर लेते हैं जब कैदी,
तो कार आमद सितमगरों की जंजीरें नहीं होती।
मोहब्बत का ताल्लुक तो रूह से मख़सूस होता है,
ये दिल की बात है और इस पे तकरीरें नहीं होतीं।
समझ भी लें मुहब्बत को तो हम समझ नहीं सकते,
किताब-ए-इश्क़ की लफ़्जों में तफ़सीरें नहीं होती।
ख़ुलूस और सिद्क के सजदों में तासीरें जो होती हैं,
दिखावे की इबारत में वो तासीर नहीं होती।
ख़ुद उनकी दीद से बख्शी तसव्वुर उनका बेहतर है,
के इतनी बेमुरव्वत उनकी तस्वीरें नहीं होतीं।"[15]

आज तक जितने भी लोगों ने अपने जीवन में सफ़लता हासिल की है, उसके पीछे कोई ताक़त उसके साथ रही है। या साथ कुछ न कुछ ताक़त काम करती है। किसी व्यक्ति को अपने जीवन में सफल होने की हुक या बेचैनी जब होती है तो रात और दिन में कोई अंतर नहीं रह जाता है। वह कर्त्तव्य पथ पर निरंतर बढ़ते जाता है। कभी-कभी कोई घटना या हालात भी व्यक्ति को सफ़लता की राह पकड़ा देती है, बस उस व्यक्ति में जुनून होना चाहिए। किसी व्यक्ति की प्रमुख उक्ति भी व्यक्ति को हमेशा नई ऊर्जा उसके लक्ष्य की ओर बढ़ाते रहती है और कभी-कभी व्यक्ति अपने हृदय में जोश और ऊर्जा का संचार करने के लिए स्वयं कविता गढ़ लेता है। इसी तरह के प्रतिभावान कवि थे- आनंद बख्शी। उन्होंने अपने संघर्ष के दिनों में एक दूसरी कविता लिखी थी 'मैं कोई बर्फ़ नहीं हूँ जो पिघल जाऊंगा'। यह कविता लिखने के बाद जब भी मन हार मानकर बैठ जाता, इस कविता को स्मृति में लाते या कविता की पंक्तियों को गाते। स्मृति में आते ही यह कविता आनंद बख्शी के हृदय में एक नई शक्ति और ऊर्जा का संचार कर देती। आनंद बख्शी खुद इस संबंध में बताते हैं कि "मैंने एक कविता लिखी थी ताकि जब भी नाकामी का डर मुझ पर हावी होने लगे तो मैं उसे गाकर ताक़त हासिल कर सकूँ-
मैं कोई बर्फ़ नहीं जो पिघल जाऊँगा।
मैं कोई हर्फ़ नहीं जो बदल जाऊँगा।।
मैं सहारों पे नहीं खुद पे यकीं रखता हूँ,
गिर पडूँगा तो क्या, मैं सँभल जाऊँगा।
चाँद सूरज की तरह वक्त पे निकला हूँ मैं,
चाँद सूरज की तरह वक्त पे ढल जाऊँगा।
काफ़िले वाले मुझे छोड़ गए हैं पीछे,
काफ़िले वालों से आगे मैं निकल जाऊँगा।
मैं अँधेरों को मिटा दूँगा चरागों की तरह,
आग सीने में लगा लूँगा, मैं जल जाऊँगा।
हुस्नवालों से गुज़ारिश है के पर्दा कर लें,
मैं दीवाना, मैं आशिक़ हूँ मचल जाऊँगा।
रोक सकती है मुझे रोक ले दुनिया 'बख्शी'
मैं तो जादू हूँ, मैं जादू हूँ चल जाऊँगा।"[16]

ये तो थी उनकी कविता की यात्रा। जब उनके गीतों की यात्रा की बात करें तो उनकी लेखनी का और अधिक विस्तार पाते हैं जिसे कम शब्दों या वाक्यों में निपटाना कठिन ही नहीं नामुमकिन है क्योंकि उन्होंने छह सौ से अधिक फिल्मों में लगभग चार हजार से अधिक गीत लिखें हैं जो एक अमूल्य निधि है। उन्होंने एक से बढ़कर एक बेहतरीन गीत लिखे हैं। आनंद बख्शी ने न केवल गीतकार बनकर गीत लिखे बल्कि कविता लिखकर हिंदी के प्रचार-प्रसार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और अपने कवित्व धर्म का भी परिचय दिया। हिंदी भाषा को कविता एवं चलचित्र गीतों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया। अपनी कविता के माध्यम से हताश, निराश एवं संवेदनहीन हृदय में खुशियों की लहर उत्पन्न कर संवेदना का संचार किया और निराशा की बेड़ियों को तोड़कर श्रोताओं के हृदय को झंकृत और आनंदित किया। आनंद बख्शी एक ऐसा नाम है जिसको पाकर चलचित्र जगत गौरवान्वित है। हिंदी भाषा हर एक हृदय के आसपास और होठों के अत्यधिक करीब है। उनके गीतों में प्रेम, दुख, पीड़ा, सौंदर्य, मस्ती, उत्साह, जोश, होश, नशा, उमंग, सहानुभूति और आत्मसमर्पण के भाव स्वतः उभर कर सामने

आ जाते हैं। आनंद बख्शी ही वह नाम है जिनके आने से चलचित्र जगत को अच्छे-अच्छे गीत-संगीत और बेहतरीन फनकार मिल गए। वर्ष 1958 के चलचित्र 'भला आदमी' से सफर की शुरुआत करते हैं और यह यात्रा 2002 के चलचित्र 'गदर एक प्रेमकथा' तक चलती है। आनंद बख्शी फिल्मों में गीतकारी करियर भगवान दादा की फिल्म 'भला आदमी'(1958) से की, जिसमें उन्होंने चार गीत लिखे- 'धरती के लाल ना कर इतना मलाल, हमसे करेगा जो मुकाबला, अब चाहे तो ले ले मेरी जान और सैंया छोडो भी कलाई अब हाथ से'। इस फ़िल्म में उनके गीतों ने कोई कमाल नहीं दिखाया बल्कि पूरी फ़िल्म फ्लॉप हो गई। 1958 से 2002 के बीच अनगिनत ऐसे बेहतरीन गीत लिखे जिससे यह कहा जा सकता है कि अगर चलचित्र जगत में और कोई गीतकार न भी होते तो अकेले आनंद बख्शी ही चलचित्र को अपने पायदान तक पहुँचाने में काफी थे। आज तक बड़े-बड़े संगीत निर्माताओं द्वारा निर्मित चलचित्र को शायद वह सफलता न मिलती जिनको बनाने वाले आनंद बख्शी जैसे गीतकार को पाकर गर्व करते हैं। अपने बेहतरीन गीतों के माध्यम से न केवल श्रोताओं को हँसाया, गुदगुदाया और प्रेम के रस से सराबोर किया बल्कि जीवन जीने की एक दृष्टि भी दी। जहाँ 'सिग्नल कोर', 'मैं इक हिंदुस्तानी बस, यही मेरी पहचान', 'इकहत्तर साल गुजरे' जैसी कविता लिखकर अपना कवि परिचय दिया तो वही 'कोरा कागज था ये मन मेरा', 'आने से उसके आए बहार', 'गाड़ी बुला रही है', आदमी मुसाफिर है', चिंगारी कोई भड़के...' जैसे बेहतरीन गीत लिखकर अपने गीतकार प्रतिभा का परिचय दिया।

निष्कर्ष:- आनंद बख्शी को कवि के रूप में बहुत कम लोग जानते हैं लेकिन उनकी कविता नई कविता के दौर की तरह है। जहाँ नई कविता में कवि अपने जीवन की अनुभूति एवं पीड़ा खुले रूप में करते हैं। उनकी कविता में भी वही अनुभूति, पीड़ा और आर्थिक तंगी की तड़प दिखाई पड़ती है। जीवन की विषमताओं से उबरने के लिए प्रेरित कविताएँ लिखते और आने वाली चुनौतियों का सामना करते। कभी खुद ही प्रेरित कविता लिखते तथा उस कविता का पाठ कर स्वयं ही प्रेरित होते। जब भी खालीपन का दर्द सताता या गरीबी का अहसास होता, अपनी लिखी कविताएँ गाकर मन की व्यथा कम करते। उनकी कविताओं में जीवन का संघर्ष, निराशापन, व्याकुलता, किसी वस्तु के प्रति प्रेम आदि का अनूठा चित्रण मिलता है। जब अपनी कविताओं में जीवन की सच्चाई को दर्शाया तो पाठक की आँखें छलक उठी, दिल भर आया, होश खो बैठे और परवान चढ़ गया। ऐसे कवि, शायर व गीतकार थे- आनंद बख्शी। आनंद बख्शी की कविता एक युग की सच्चाई को बयाँ करती है। उन्होंने न केवल कविताओं में युग की सच्चाई और अपनी व्यथा को व्यक्त कर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है बल्कि उनका साहित्य और सिनेमा में अविस्मरणीय योगदान है। यह योगदान हिंदी सिनेमा, भाषा और साहित्य के लिए एक अनोखा प्रमाण है।

सन्दर्भ सूची:-

1. बक्शी, राकेश आनंद- नग्में किस्से बातें यादें, अद्विक पब्लिकेशन, दिल्ली प्रथम संस्करण- 2022, पृष्ठ संख्या-12
2. पाण्डेय, देवमणि- सिने गीतकार, अद्विक पब्लिकेशन प्रा. लि., पटपड़गंज, दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2023, पृष्ठ संख्या-18
3. बक्शी, राकेश आनंद- नग्में किस्से बातें यादें, अद्विक पब्लिकेशन, दिल्ली प्रथम संस्करण- 2022, पृष्ठ संख्या-36
4. वही, पृष्ठ संख्या-37
5. वही, पृष्ठ संख्या-37
6. वही, पृष्ठ संख्या-63
7. वही, पृष्ठ संख्या-45
8. वही, पृष्ठ संख्या- 72-73
9. वही, पृष्ठ संख्या-75
10. वही, पृष्ठ संख्या-59
11. वही, पृष्ठ संख्या- 90-94
12. वही, पृष्ठ संख्या- 176
13. वही, पृष्ठ संख्या- 192-193
14. वही, पृष्ठ संख्या-34-35
15. वही, पृष्ठ संख्या- 34-35
16. वही, पृष्ठ संख्या-146